RNI No. MPHIN/2007/23351

श्रीफल

वर्ष : 14 • अंक : 2 | 2 अप्रैल, 2023 | मूल्य : 50 • पेज : 36

अहिंसा का यात्री महावीर
साधक जियो और जीने दो का

हर जीवित प्राणी के प्रति दयाभाव ही अहिंसा है।
घृणा से मनुष्य का विनाश होता है।

विशेषांक प्रस्तुति
अन्तर्मुखी मुनि पूज्य सागर महाराज

अहिंसा का यात्री महावीर

सम्पादकीय

प्रिय पाठकों

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि महावीर जयंती के सुअवसर पर आप सभी के समक्ष अन्तर्मुखी मुनि पूज्य सागर महाराज द्वारा संकलित अहिंसा का यात्री महावीर विशेषांक प्रस्तुत किया जा रहा है। आपको यह विशेषांक कैसा लगा, इस पर अपने विचार हमें मोबाइल नंबर 9460155006 पर जरूर व्हाट्सएप करें।

महावीर जयंती की शुभकामनाओं के साथ...

विशेषांक संयोजक

दीपक जैन

अहिंसा का यात्री महावीर

नमनकर्ता

**श्रीमान ओमप्रकाश-प्रभा देवी सेठी,
श्रीमान संदीप-सविता देवी,सेठी श्रीमान सचिन-अमिता,
यशस्वी, लहर, अवयुक्त, अव्यान एवं समस्त सेठी परिवार
गुवाहाटी/बंगलोर**

श्रीफल फाउंडेशन

श्रीफल

अप्रैल 2023 4

अहिंसा का यात्री महावीर

प्रस्तुति

अंतर्मुखी मुनि श्री पूज्य सागर महाराज

अहिंसा का यात्री महावीर

अनुक्रमणिका

- "पुरुरवाभील" 6
- "मरीचिकुमार" 7
- मारीचिकुमार का भव भ्रमण 8
- "विश्वनंदी" 9
- "अर्धचक्रीत्रिपृष्ठकुमार" 10
- "पुण्यशालीमृगेन्द्र" 11
- तीर्थंकर प्रकृति का बंध 13
- वीरप्रभु का गर्भ महोत्सव 14
- ऐसे हुआ जन्माभिषेक महोत्सव 15
- ऐसा था उनका बचपन 16
- देवों ने आकर मनाया दीक्षा महोत्सव 17
- ऐसे टूटे चन्दना के बंधन 18
- भगवान ने प्राप्त की उपसर्ग पर विजय 19
- अद्भुत था केवलज्ञान महोत्सव 20
- अग्नि की शिखा पर हुआ शरीर का संस्कार 21
- भीलों का राजा, जो संत समागम से बन गया अगले जन्म में महावीर 22
- भगवान आदिनाथ के पोते मरीचि के रूप में भी जन्मे थे महावीर 23
- राजा के आंगन में 15 महीने तक हुई रत्न वर्षा तो रानी को आए 16 स्वप्न 24
- जब डोल गया था इन्द्र का सिंहासन 25
- अद्भुत विस्तार वाले ऐरावत हाथी पर गोद में बैठाकर इन्द्र ने कराया था महावीर का जन्मकल्याणक 26
- वीर, अतिवीर, महावीर ने दिया था पंचशील का सिद्धांत 27
- भगवान महावीर स्वामी के चौंतीस भव (जन्म) इस प्रकार हैं 28
- महावीर अनमोल वचन 29
- महावीर अष्टक 30
- भिल्लराज पुरुरवा 31

अहिंसा का यात्री महावीर

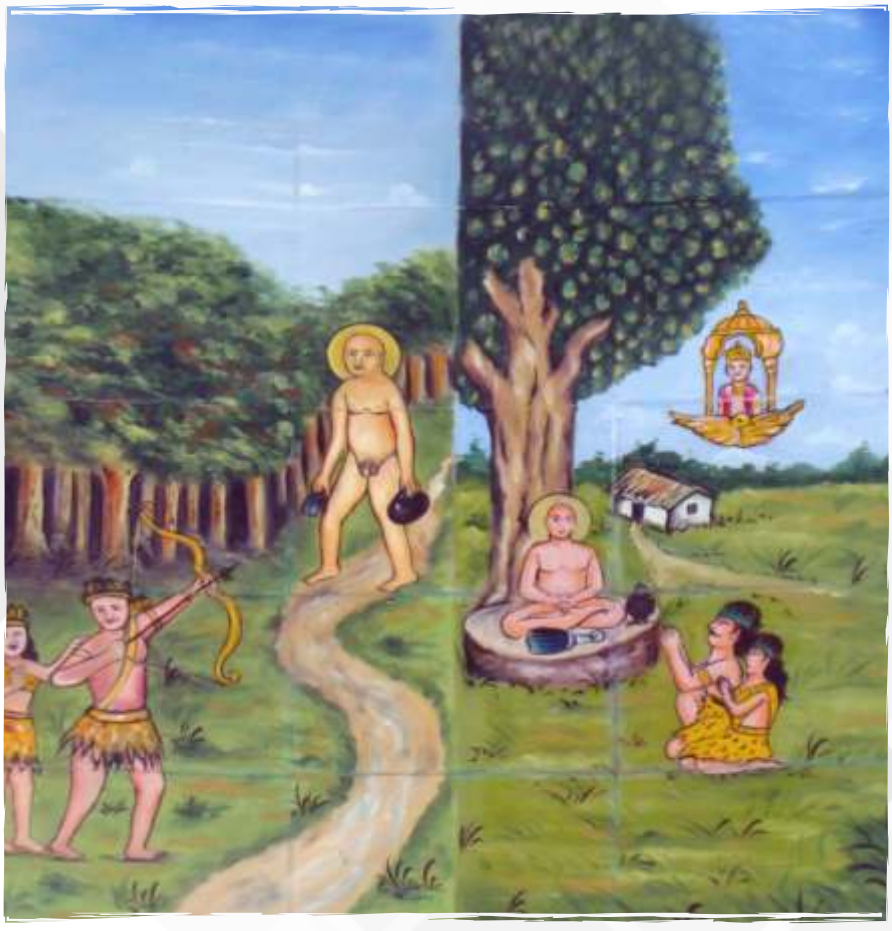

मुनिराज ने करवाया व्यसनों का त्याग

"पुरुरवाभील"

जम्बूद्वीप के पूर्व विदेह क्षेत्र में सीता नदी के उत्तर किनारे पर 'पुष्कलावती' नाम का देश है। उसकी 'पुण्डरीकिणी' नगरी में एक 'मधु' नाम का वन है। उसमें 'पुरुरवा' नाम का एक भीलों का राजा अपनी 'कालिका' नाम की स्त्री के साथ रहता था। एक दिन उसने श्रीसागरसेन' नाम मुनिराज भ्रमण करते देखा तो मारने लगा लेकिन उसकी पत्नी ने उसे रोक दिया। मुनिराज ने उसे सारे व्यसनों का त्याग करवा दिया। अंतर में मर कर वह स्वर्ग में जाकर देव बन गया।

अहिंसा का यात्री महावीर

कई भव बिताए नरक में

"मरीचिकुमार"

अयोध्या नगर में आदिनाथ भगवान के ज्येष्ठ पुत्र भरत चक्रवर्ती की अनंतमती रानी से पुरुरवा भील मरीचिकुमार के रूप में जन्मा।अपने बाबा भगवान ऋषभदेव की दीक्षा के समय उसने चार हजार राजाओं के साथ दिगबंर दीक्षा धारण कर ली। भगवान आदिनाथ छः महीने का उपवास लेकर ध्यान में बैठ गए। लेकिन मरीचि आदि राजा क्षुधा आदि की वेदनाओं से घबराकर वन के फलों को खाना शुरू कर दिया, तब देवताओं ने उन्हें रोका अउ कहा की तो इस दिगम्बर वेश में यह नही कर सकते हों। तभी मरीचि में दिगम्बर जैनेश्वरी छोड़कर कर पारिव्राजक दीक्षा धारण कर ली और बाकी राजा भी मरीचि के साथ आ गए। लेकिन एक वर्ष बाद भगवान ऋषभदेव की प्रेरणा से बाकी सारे राजाओं ने पुनः जैनेश्वरी दीक्षा ले ली लेकिन मारीचि कुमार ने नहीं ली। मान कषाय के अहंकार में उसने उसी समय से तीन सौ त्रेसठ मत चले।

अहिंसा का यात्री महावीर

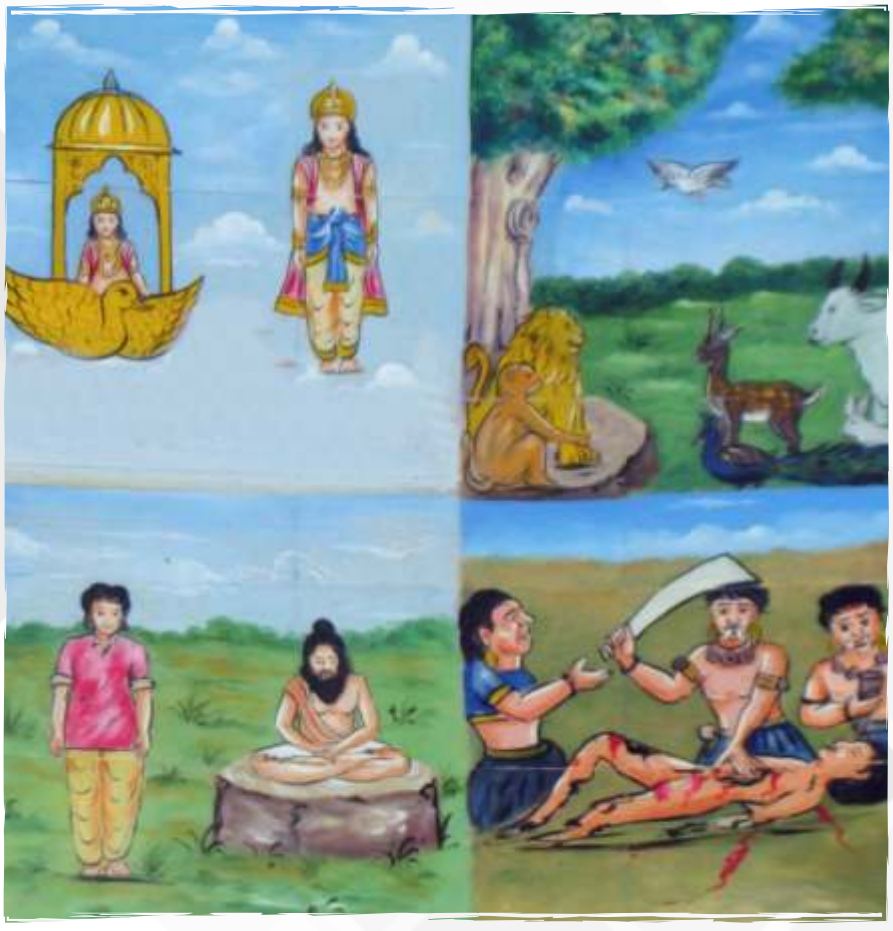

मारीचिकुमार का भव भ्रमण

मरीचिकुमार आयु के अन्त में मरकर ब्रह्मस्वर्ग में दस सागर आयु वाला देव हो गया। वहां से आकर जटिल ब्राह्मण हुआ, पुनः पारिव्राजक बना। मरकर सौधर्म स्वर्ग में देव हुआ, पुनः वहां से पुष्पमित्र ब्राह्मण होकर परिव्राजक बना। फिर सौधर्म स्वर्ग में देव हुआ और वहां से आकर अग्निसह ब्राह्मण होकर पारिव्राजक दीक्षा ले ली। इसके बाद मरकर देव हुआ, वहां से अग्निमित्र ब्राह्मण होकर पारिव्राजक तापसी हुआ। पुनरपि माहेन्द्र स्वर्ग में देव हुआ, वहां से आकर भारद्वाज ब्राह्मण होकर त्रिदण्डी साधु बन गया और पुनरपि स्वर्ग में गया। वहां से च्युत होकर मिथ्यात्व के निमित्त से यह मारीचि कुमार त्रस-स्थावर योनियों में परिभ्रमण करता रहा। मारीचि कुमार का जीव इस तरह असंख्यात वर्षों तक इन कुयोनियों में भ्रमण करते हुए शांत हो गया। कुछ पुण्य से राजगृह नगर के शांडिल्य ब्राह्मण की पारशरी पत्नी से 'स्थावर' नाम का पुत्र हुआ। वहां भी सम्यदर्शन से शून्य पारिव्राजक की दीक्षा लेकर अन्त में मरकर माहेन्द्र स्वर्ग में सात सागर की आयु वाला देव हो गया।

अहिंसा का यात्री महावीर

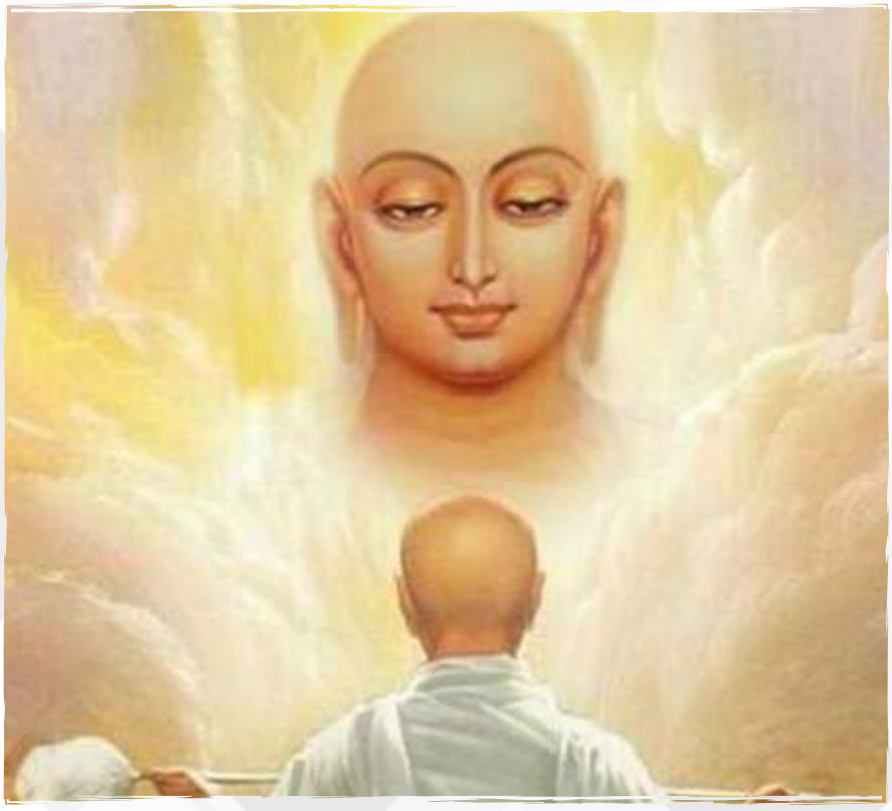

भाई को देखकर पसीजा दिल

"विश्वनंदी"

मगध राजगृह नगर में 'विश्वभूति 'राजा की 'जैनी' नाम की रानी से मारीचिकुमार का जन्म 'विश्वनंदी' के रूप में हुआ। विश्वभूति राजा का एक विशाखभूति नाम का छोटा भाई था, उसकी लक्ष्मणा पत्नी से 'विशाखनन्दि' नाम का मूर्ख पुत्र हो गया।विश्वभूति ने अपने छोटे भाई को राजपाट सौंप दिया और अपने बेटे को युवराज बना दिया और स्वयं दीक्षित हो गए। एक दिन विश्वनंदी मनोहर नामक उद्यान में अपनी स्त्रियों के साथ क्रीड़ा कर रहे थे। उद्यान की सुंदरता देख विशाखनंदी ने वह बगीचा चाहा। विशाखभूति ने विश्वनंदी को युद्ध के बहाने बाहर भेज दिया और बगीचा अपने बेटे को दे दिया। विश्वनंदी को पता चला तो वह बहुत क्रोधित हुआ और और अपने चाचा के बेटे विशाखनन्दी को मारने दौड़ा। विशाखनंदी के डर कर दौड़ने से युवराज विश्वानन्दी के मन में करुणा आ गई और संभूत नामक मुनि से दीक्षा धारण कर ली। चाचा विशाखभूति ने दीक्षा ले ली । मुनि विश्वनन्दी आहार करने नगर में आए तो विशाखनंदी ने हंसी के साथ दुर्वचन कहे ,मुनि को क्रोध आ गया वह निदान सहित संन्यास से मरणकर महाशुक्र स्वर्ग में देव हो गया । वहीं चाचा विशाखभूति मरकर देव हो गया ।

अहिंसा का यात्री महावीर

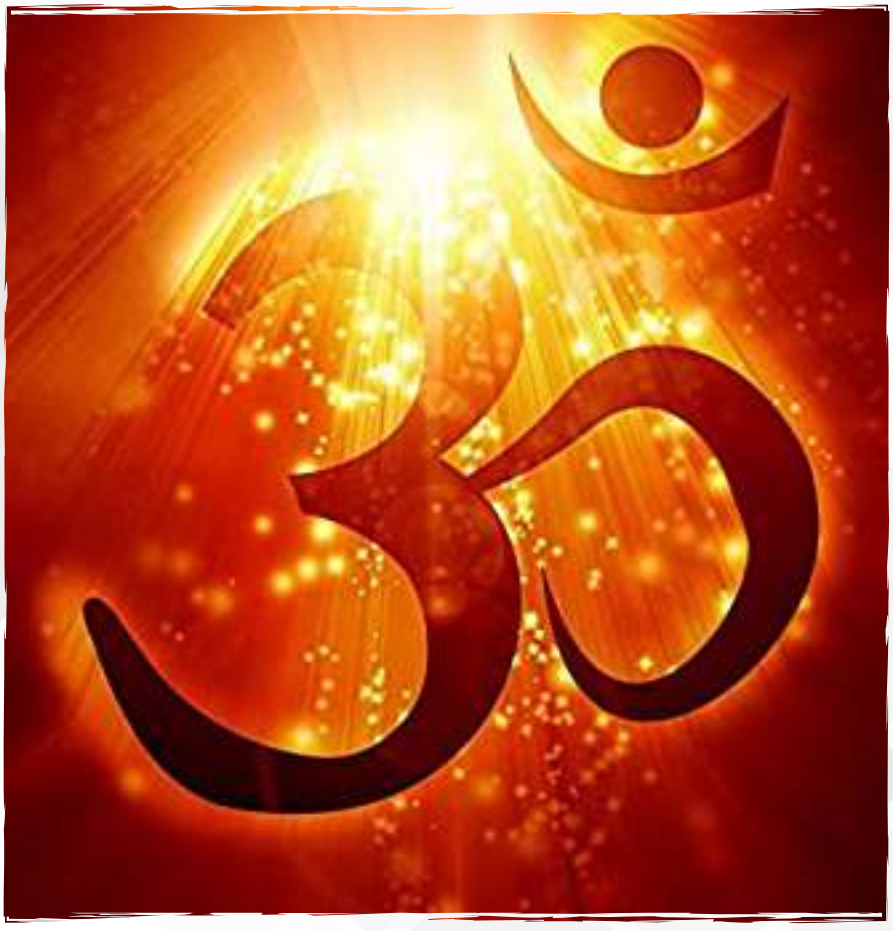

भोग-विलास से पहुंचा नरक में

"अर्धचक्रीत्रिपृष्ठकुमार"

पोदनपुर नगर में प्रजापति महाराजकी जयावतीरानी से 'विशाखभूति का जीव' विजय नाम से जन्मा, दूसरी रानी मृगावती से 'विश्वनंदी का जीव' त्रिपृष्ठ के रूप में जन्मा। विशाखनंदि का जीव विजयार्ध पर्वत की उत्तर श्रेणी के अलकापुर में मयूरग्रीव विद्याधर की नीलांजनारानी से 'अश्वग्रीव' पुत्र के रूप में जन्मा। कालांतर त्रिपृष्ठ ने अपने भाई विजय के साथ राज्य लक्ष्मी का उपभोग किया और अंत में नरक चला गया। वहां से पुनरपि इसी जम्बूद्वीप में सिंधुकूट की पूर्व दिशा में हिमवान्पर्वत के शिखर पर सुन्दर बालों से युक्त सिंह के रूप में जन्मा।

अहिंसा का यात्री महावीर

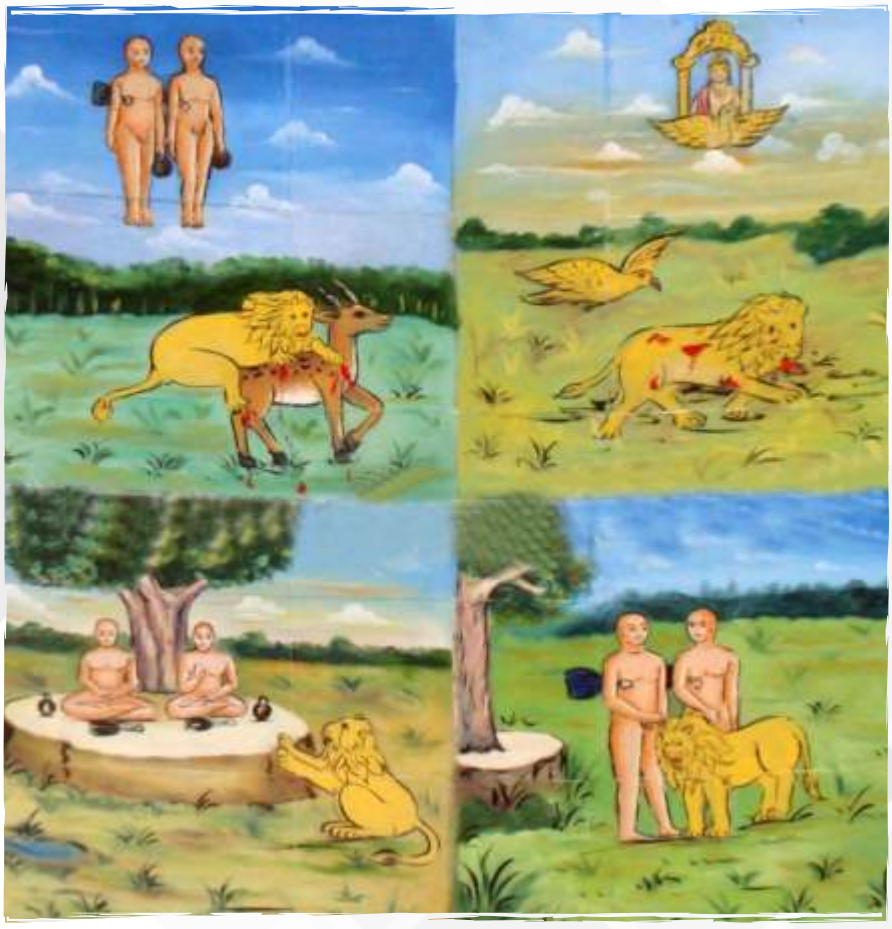

निराहार व्रत ग्रहण किया सिंह ने

"पुण्यशालीमृगेन्द्र"

वह सिंह एक हिरण को खा रहा था, तभी अजितञ्जय' और 'अमितगुण' नामक दो मुनि आकाश से उस सिंह के पास आए और उपदेश दिया कि पिछले जन्म में अर्धचक्रीत्रिपृष्ठ था और तूने नरक में घोर यातनाएं सही थीं। इसे सुनते ही सिंह को स्मरण हो गया और वह रोने लगा। उसकी भावना देखकर मुनियों ने उसे सम्यक्त्व और अणुव्रत ग्रहरण कराये। सिंह ने मुनिराज को बार बार प्रणाम किया और तत्काल ही श्रावक के व्रत ग्रहण किये। चूंकि केवल मांस खाता था इसलिए उसने ''निराहार व्रत'' ग्रहण किया था।

अहिंसा का यात्री महावीर

पुनः मरीचि कुमार के जीव की जैनेश्वरी दीक्षास्वर्ग से आकर सिंह का कनकप्रभ नगर के राजा कनकपुंख विद्याधर और कनकमाला रानी के 'कनकोज्जवल' नाम का पुत्र हुआ। किसी दिन प्रियमित्र नाम के अवधिज्ञानी मुनि से दयामय जैनधर्म का उपदेश सुनकर दीक्षा ले ली। फिर 'कनकोज्जवल' मुनिराज संन्यास विधि से मरकर सातवें स्वर्ग में देव हो गये वहां के भोगों को भोगकर समाधिपूर्वक प्राण छोड़े और इसी अयोध्या के राजा वङ्कासेन की रानी शीलवती से 'हरिषेण' पुत्र हो गया। हरिषेण ने श्रुतसागर मुनी से दीक्षा ले ली और महाशुक्र स्वर्ग में देव हो गये। वहां से चयकर धातकी खंड की पुंडरीकिणी नगरी के राजा सुमित्र की रानी मनोरमा से 'प्रियमित्र' नाम का पुत्र हो गया। यह प्रियमित्र चक्रवर्ती पद को प्राप्त हुआ लेकिन क्षेमंकर जिनेन्द्र धर्मोपदेश सुनरक दीक्षित हो गया। यह प्रियमित्र मुनि आयु के अन्त में समाधिपूर्वक मरण करके सहस्रार स्वर्ग में 'सूर्यप्रभ' नाम के देव हुए। वहां पर अठारह सागर तक दिव्य सुखों का अनुभव कर जम्बूद्वीप के छत्रपुर नगर के राजा नंदिवर्धन की वीरवती रानी से 'नंद' नाम का एक सज्जन पुत्र हुआ। यहां भी अभिलषित राज्य का उपभोग कर 'प्रोष्ठिल' नाम के श्रेष्ठ गुरू के पास दीक्षा ले ली।

अहिंसा का यात्री महावीर

तीर्थंकर प्रकृति का बंध

सभी दिगम्बर मुनि पंचमहाव्रत, पंचसमिति, पंचेद्रिंय निरोध, षट् आवश्यक क्रिया, केशलोंच, वस्त्रों का पूर्ण त्याग, स्नान का त्याग, पृथ्वी पर शयन, दंतधावन का त्याग, खड़े होकर भोजन और एक बार भोजन इस प्रकार अट्ठाईस मूलगुणों का पालन करते हैं। परीगृह और उपसर्गों को शांति और क्षमाभाव से सहन करते हैं। उत्तम क्षमादि इस धर्मों का पालन करते हैं। नंद मुनिराज ने तपस्या से अपनी आत्मा को निर्मल बना लिया एवं दर्शनविशुद्धि आदि सोलहकारण भावनाओं का चिंतवन करने लगे।

अहिंसा का यात्री महावीर

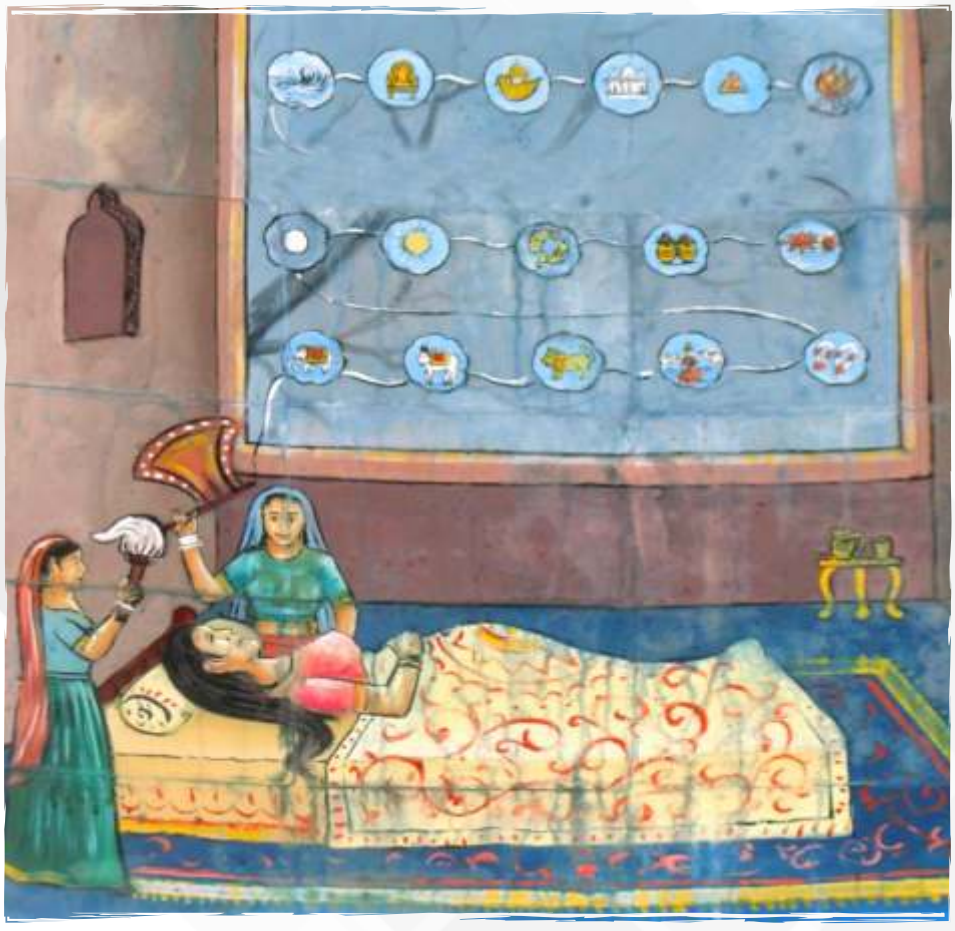

वीरप्रभु का गर्भ महोत्सव

पुष्पोत्तर विमान के इन्द्र की आयु जब छह मास शेष रही तब इसी भरतक्षेत्र के 'विदेह' नामक देश संम्बन्धी कुंडलपुर (वैशाली) नगर के राजा सिद्धार्थ के आंगन में प्रतिदिन साढ़े सात करोड़ रत्नों की धारा बरसने लगी जब पंचमकाल प्रारम्भ होने के पचहत्तर वर्ष साढ़े आठ माह शेष रहे थे तब आषाढ़ शुक्ल षष्ठी के दिन उत्तराषाढ़ नक्षत्र में राजा सिद्धार्थ की प्रसन् नवदना रानी त्रिशला रत्नजड़ित पलंग पर सो रही थीं, रात्रि के पिछले पहर में सोलह स्वप्न देखे। ऐरावत हाथी ,सुन्दर बैल, सिंह, हाथियों द्वारा स्वर्णकलश, से अभिषिक्त होती हुई लक्ष्मी, दो पुष्प माला, पूर्णचन्द उदित होता हुआ सूर्य, दो स्वर्ण कलश, क्रीड़ासक्त दो मछलियां, सुन्दर सरोवर, समुद्र, सिंहासन, स्वर्ग विमान, नागेन्द्र भवन, रत्नराशि और धूम रहित अग्नि ये सोलह स्वप्न हैं बाद में मुख में प्रवेश करता हुआ एक हाथी देखा। उन्होंने राजा को इन सपनों के बारे में बताया। राजा ने कहा कि तीन लोक के नाथ तुम्हारे गर्भ में आ गये हैं। सौधर्म इंद्र सहित सब देवों ने आकर राजा सिद्धार्थ और रानी त्रिशला का गर्भ कल्याणक सम्बन्धी अभिषेक किया तथा देव और देवियों को यथायोग्य कार्यों में नियुक्त कर दिया।

अहिंसा का यात्री महावीर

ऐसे हुआ जन्माभिषेक महोत्सव

नौ माह पूर्ण हो जाने पर चैत्र शुक्ल त्रयोदशी के दिन, अर्यमा नाम के शुभ योग में माता त्रिशला ने पूर्व दिशा के सदृश अच्युतेन्द्र जीव को बालसूर्य रूप में जन्म दिया। उस समय देवों के यहां बिना बजाये बाजे बजने लगे, कल्पवृक्षों से पुष्प बरसने लगे, सर्वत्र विश्व में आनन्द की एक लहर दौड़ गई। सौधर्म इन्द्र एक लाख योजन विस्तृत ऐरावत हाथी को सजाकर उसके दांतों के सरोवरों के कमल पत्रों पर अप्सराओं को नृत्य कराते हुए असंख्य देवों के साथ आये और नगरी की तीन प्रदक्षिणायें दीं। 'इन्द्राणी ने तत्काल प्रसूतिग्रह में जाकर जिनबालक का दर्शन किया और उसे गोद में लेकर इन्द्र को सौंप दिया। इन्द्र ने जिनबालक को ऐरावत हाथी पर विराजमान किया और देवों से घिरा हुआ क्षणमात्र में सुमेरू पर्वत पर जा पहुंचा। वहां जाकर जिनबालक को पांडुक शिला पर स्थित विराजमान किया और क्षीरसागर के जल से भरे हुए 1008 कलशों से अभिषेक किया, अनेकों स्तोत्रों से भगवान् की स्तुति की। इन्द्र ने उन्हें उत्तमोत्तम आभूषणों से विभूषित कर उनके 'वीर' और 'वर्धमान' ऐसे दो नाम रखे। अनन्तर वापस लाकर माता की गोद विराजमान किया तथा बड़े उत्सव से आनन्द नामक नाटक करके प्रभु को नमस्कार कर स्वस्थान को चले गये।।

अहिंसा का यात्री महावीर

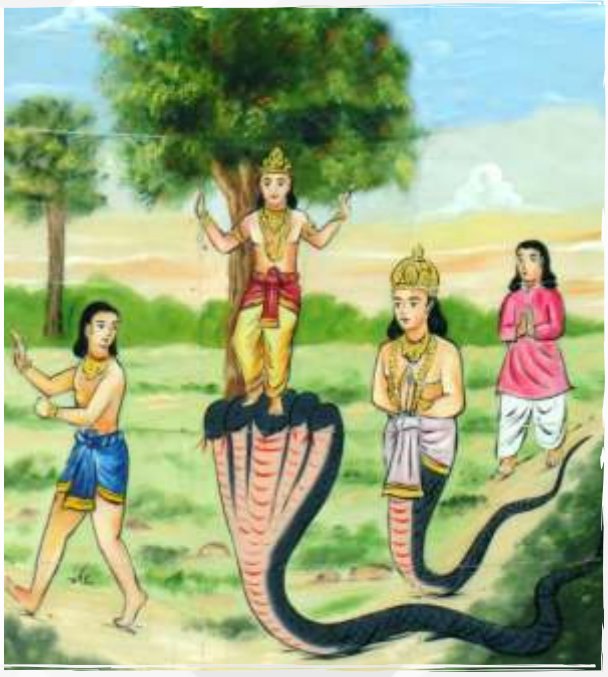

ऐसा था उनका बचपन
(बाल्यकाल की विशेषताएं)

एक बार 'संजय' और 'विजय' नामक दो चारण मुनियों को किसी पदार्थ में संदेह हुआ, भगवान् के जन्म के बाद ही वे उनके समीप आये और प्रभु के दर्शन मात्र से ही उनका संदेह दूर हो गया। इसलिए उन्होंने बड़ी भक्ति से बालक का 'सन्मति' यह नाम रखा। इन्द्र की आज्ञा से कुबेर प्रतिदिन भगवान के भोजन, आभूषण आदि स्वर्ग से ही आते थे। किसी समय स्वर्ग में वर्धमान के गुणों की चर्चा इन्द्र की सभा में सुनकर एक 'संगम' नाम का देव परीक्षा के लिए आया। भगवान् अनेक राजकुमारों के साथ एक वृक्ष पर चढ़े हुए क्रीड़ा में तत्पर थे। वह देव बड़े विकराल सर्प का रूप लेकर वृक्ष की जड़ से स्वंध तक लिपट गया। कुमार महावीर ने निर्भय हो उस समय सर्प पर चढ़कर इस प्रकार क्रीड़ा की जैसे माता के पलंग पर किया करते थे। कुमार की क्रीड़ा से हर्षित हो देव ने भगवान की स्तुति कर 'महावीर' नाम रखा। बड़े होने पर उन्होंने विवाह के प्रस्ताव को ठुकरा दिया बाल ब्रह्मचारी रहे। इस प्रकार तीस साल का कुमार व्यतीत हो गया ।

अहिंसा का यात्री महावीर

देवों ने आकर मनाया दीक्षा महोत्सव

(वीरप्रभु का दीक्षा महोत्सव)

किसी दिन भगवान् को स्वयं ही आत्मज्ञान हो गया। उसी समय लौकांतिक देवों ने आकर भगवान् की स्तुति की और दीक्षा कल्याणक महोत्सव मनाया। भगवान् बंधुजनों से विदा लेकर 'चन्द्रप्रभा' नाम की पालकी पर सवार हुए। उस समय पालकी को सर्वप्रथम भूमिगोचरी राजाओं ने फिर विद्याधर राजाओं ने, फिर इन्द्रों ने उठाया। 'षण्ड' नाम के वन में ले गये। वहां भगवान् रत्नमयी शिला पर उत्तर की ओर मुंह कर बेला का नियम (दो दिन का उपवास) लेकर विराजमान हो गये। मगसिर वदी दशमी के दिन भगवान् पहले वस्त्र और फिर शरीर से निर्मम होकर केशों को उखाड़ फेंक दिये। इन्द्र ने केशों को उत्सव पूर्वक क्षीर सागर में विसर्जित किया। भगवान् दिगम्बर मुनि हो गये तत्काल ही उन्हें मनःपर्यय ज्ञान प्रगट हो गया। पारणा के दिन भगवान् कूल ग्राम आए। वहां के राज 'कूल' ने भक्ति से पड़गाहन कर नवधा भक्ति से भगवान् को खीर का आहार दिया, फलस्वरूप उनके घर पर पंचाश्चर्यों की वर्षा हुई। भगवान् निर्जन वनों में तपश्चरण करने लगे।

अहिंसा का यात्री महावीर

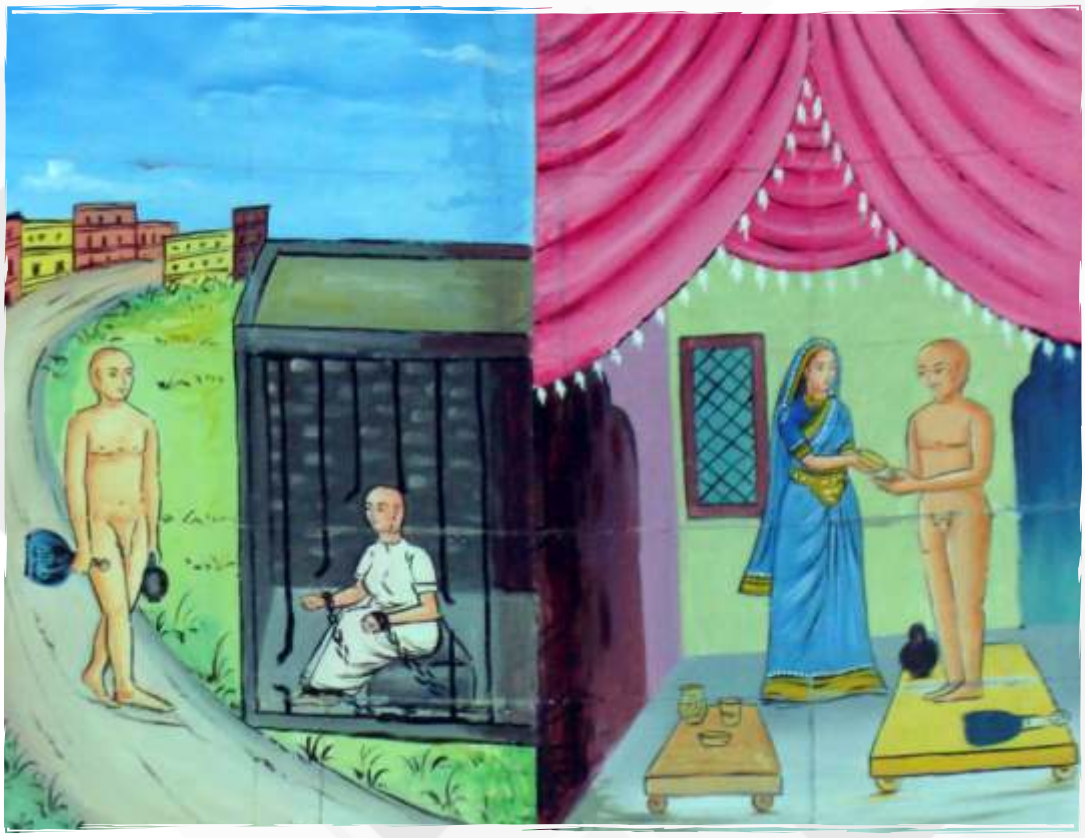

ऐसे टूटे चन्दना के बंधन

(चन्दना के बन्धन टूट गये)

राजा चेटक की चन्दना पुत्री (भगवान की छोटी मौसी) को वन क्रीड़ा में आसक्त देख, किसी विद्याधर ने उसे हरण कर लिया और पत्नी के डर से महाटवी में छोड़ दिया। इसके बाद वहां के भील ने उसे ले जाकर वृषभदत्त सेठ को दे दिया। सेठ की पत्नी सुभद्रा चन्दना को खाने के लिए मिट्टी के सकोरे में कांजी से मिश्रित कोदों का भात दिया करती थी और सांकल से बांधे रखती थी। एक दिन कोशाम्बी नगरी में आहार के लिए भगवान् महावीर स्वामी आ गये। उन्हें देखकर चन्दना उनके सामने जाने लगी। उसके सांकल के बन्धन टूट गए, उसके शिर पर केश, वस्त्र आभूषण सुन्दर हो गये। मिट्टी का सकोरा स्वर्ण पात्र और कोदों का भात चावल बन गया। उस चन्दना ने भगवान् को पड़गाह कर नवधा भक्ति से आहारदान दिया। इससे बंधुओं के साथ उसका समागम हो गया।

अहिंसा का यात्री महावीर

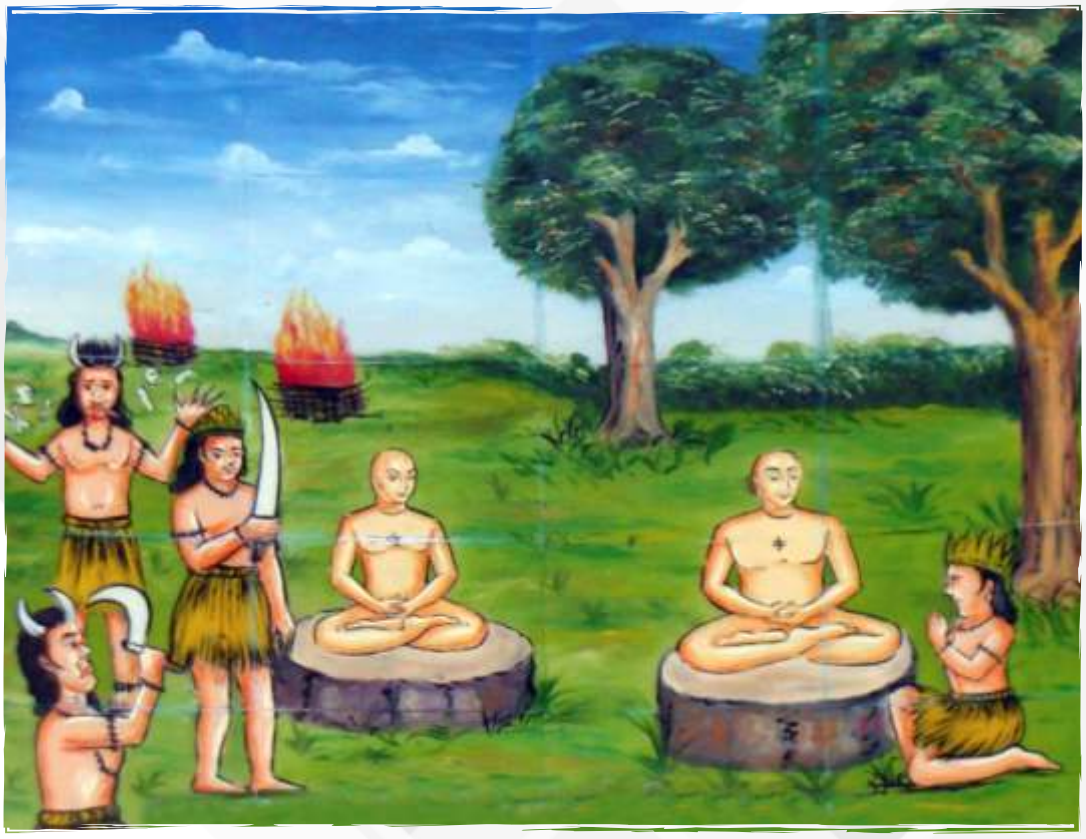

भगवान ने प्राप्त की उपसर्ग पर विजय

(भगवान् द्वारा उपसर्गविजय)

एक दिन भगवान् उज्जयिनी के अतिमुक्तक नामक श्मशान में प्रतिमोपयोग से विराजमान थे। उन्हें देखकर कापालिक ने उनके धैर्य की परीक्षा के लिए रात्रि में बड़े-बड़े वेतालों का रूप बनाकर उपसर्ग किया, अट्टाहस करते हुए, फाड़े हुए वे वेताल डरा रहे थे। इसके सिवाय सर्प, हाथी, सिंह, अग्नि और वायु के साथ भीलों की सेना बनाकर उपसर्ग किया। पाप का ही अर्जन करने में निपुण वह रूद्र अपनी विद्या के प्रभाव से भयंकर उपसर्ग करने लगा लेकिन प्रभु को ध्यान से चलायमान नहीं कर सका। अन्त में उसने 'महति' और 'महावीर' नाम रख कर अनेकों प्रकास से स्तुति की, अपनी भार्या के साथ नृत्य किया और सब मत्सर भाव छोड़कर वहां से हमेशा के लिए चला गया।

अहिंसा का यात्री महावीर

अद्भुत था केवलज्ञान महोत्सव

(भगवान् का केवलज्ञान महोत्सव)

भगवान् के छद्मस्थ अवस्था के बारह वर्ष व्यतीत हो गये। किसी दिन भगवान्, जृंभिक ग्राम के समीप ऋजुकूला नदी के किनारे 'मनोहर' वन में रत्नमयी शिला पर सालि वृक्ष के नीचे बेला का नियम लेकर प्रतिमायोग से विराजमान हुए। वैशाख शुक्ला दशमी के दिन अपराह्नकाल में, परिणामों की विशुद्धि से वे क्षपक श्रेणी पर आरूढ़ हुए। उसी समय वह चौंतीस अतिशयों से सुशोभित केवल 'परमात्मा' हो गये। पृथ्वी से पांच हजार धनुष (बीस हजार हाथ) ऊपर आकाश में सुशोभित होने लगे। सौधर्म इन्द्र ने आकर देवों के साथ समवशरण की रचना की और केवलज्ञान महोत्सव मनाया। समवशरण में बारह सभा में बैठे हुए असंख्य भव्यजीव भगवान् की दिव्यध्वनि रूपी धर्मामृत का पान करने के लिए उत्सुक थे। फिर भी भगवान् की दिव्यध्वनि नहीं खिरी। इसका कारण 'गणधर का न होना' समझकर इन्द्र के अवधिज्ञान से विचार किया एवं वेदवेदांग पारंगत गुरु गौतम गोत्रीय इन्द्रभूति नाम के ब्राह्मण के पास इन्द्र वृद्ध ब्राह्मण का रूप लेकर लाठी टेकते हुए पहुंचे। अनेकों वार्तालाप के बाद इन्द्र ने एक श्लोक का अर्थ पूछा तब ब्राह्मण ने सोचा इसके गुरु के पास ही चलकर वाद-विवाद करना चाहिये। वहां समवसरण में पहुंचकर मानस्तंभ देखते ही गौतम का मान गलित हो गया। इसके बाद इन्द्रभूति गौतम अपने पांच सौ शिष्यों और भाइयों के साथ वर्धमान स्वामी को नमस्कार कर मुनि बन गए। इसी के साथ श्रावण कृष्णा प्रतिपदा के दिन पूर्वान्ह में भगवान् की दिव्य ध्वनि खिरी, उसी दिन अपराह्न काल में ग्यारह अंगों और चौदह पूर्वों का स्पष्ट बोध प्राप्त करके इन्द्रभूति गौतम ने रात्रि के पूर्व भाग में अंगों की और पश्चिम भाग में पूर्व ग्रन्थों की रचना की। उसी समय गौतम ग्रन्थकर्ता कहलाये तथा ये महावीर स्वामी के प्रथम गणधर हुए हैं। इनके बाद वायुभूति, अग्निभूति, आदि दश गणधर और हुए।

अहिंसा का यात्री महावीर

अग्नि की शिखा पर हुआ शरीर का संस्कार

(भगवान का मोक्ष गमन)

पावापुर में पहुंचने के बाद भगवान 'मनोहर' नाम के वन के भीतर अनेक सरोवरों के बीच में मणिमयी शिला पर विराजमान हो गये। वे दो दिन तक वहां विराजमान रहे और कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी के दिन रात्रि के अन्तिम समय स्वाति नक्षत्र में तीनों योगों का निरोध कर अघातिया कर्मों का नाश करके शरीर रहित केवल गुण रूप होकर मोक्ष पर प्राप्त कर लिया। उसी समय भगवान् लोक के अग्रभाग पर जाकर विराजमान कृतकृत्य, सिद्ध, नित्य, निरंजन, भगवान् बन गये। अनंतर इंद्रादि सब देव आये और अग्नि की शिखा पर भगवान् का शरीर रखकर संस्कार किया। स्वर्ग से लाये गए गंध, माला आदि पदार्थों से भगवान की पूजा की, अनेक स्तुतियां कीं और मोक्ष कल्याणक उत्सव मनाया। जिस दिन भगवान् मोक्ष गये, उसी दिन स्वामी को केवलज्ञान प्रकटट हो गया। देवताओं द्वारा जलाई दीपकों की पंक्ति से पावानगर का आकाश जगमगा उठा। उस समय से लेकर भगवान् के निर्वाण कल्याणक को भक्ति दीपावली के रूप में मनाने लगे।

अहिंसा का यात्री महावीर

भीलों का राजा, जो संत समागम से बन गया अगले जन्म में महावीर

शास्त्रों के अनुसार तीर्थंकर बनने के लिए कई भवों के संस्कार काम आते हैं। भगवान महावीर बनने से पहले पूर्वजन्म में वह भीलों के राजा थे, उनका नाम पुरुरवा और उनकी पत्नी का नाम कालिका था। एक दिन दोनों जंगल में शिकार कर रहे थे, तभी पुरुरवा ने दूर से एक हिरण को देखा। उन्होंने उसका शिकार करने के लिए बाण उठाया, तभी पत्नी ने कहा कि यह हिरण नहीं है,, यह तो जंगल के देवता हैं। आओ उनके पास चलते हैं। पास जाकर देखा तो वह एक दिगम्बर संत थे, जिनका नाम सागरसेन मुनिराज था। मुनिराज ने उन्हें आत्मिक शांति के लिए धर्म का उपदेश दिया। इसके प्रभाव से उस दंपती ने तुरंत मद्य,मांस,मधु का त्याग कर दिया और जीवन भर उत्साह के साथ उसका निर्वाह किया। संत समागम के इस संस्कार ने उनके जीवन को बदल दिया। वह भील मृत्यु के बाद स्वर्ग में देव बन गया और फिर उसी का जन्म कालांतर में राजा सिद्धर्थ और रानी त्रिशला के यहां सारे संसार को ज्ञान बांटने के लिए हुआ।

अंतर्मुखी मुनि पूज्य सागर

अहिंसा का यात्री महावीर

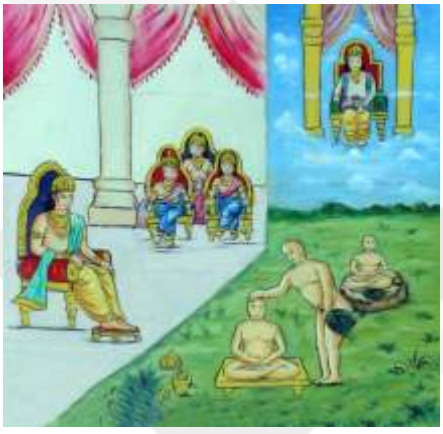

भगवान आदिनाथ के पोते मरीचि के रूप में भी जन्मे थे महावीर

भगवान महावीर ने अपने उपदेश में कहा था कि व्यक्ति जन्म से नहीं, बल्कि कर्म से महान बनता है। आज की श्रृंखला में हम भगवान महावीर की इसी सोच के बारे में जानेंगे। भगवान महावीर के जीवन से संबधित अनेक कथाओं का वर्णन शास्त्रों में मिलता है। उन भवों में एक भव है मरीचि का, यह मरीचि किसी साधारण वंश में पैदा नहीं हुआ था, वह भगवान आदिनाथ का पोता और भरत का पुत्र था। यही वह कुल था, जिसे प्रथम तीर्थंकर, चक्रवर्ती कामदेव, मोक्षगामी, प्रथम आर्यिका संसार को देने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। मरीचि ने भी दादा आदिनाथ के साथ दीक्षा धारण कर ली लेकिन कर्म उदय से मरीचि ने मुनि पद छोड़ दिया और अशुभ कर्म उदय के कारण अज्ञानता में खोटा वेश धारण कर हिंसा और असंयम को बढ़ावा देने वाले 363 मतों की स्थापना कर दी, जिसके कारण अनेक लोग कुमार्ग और दुख की राह पर चलने लगे। इन सब के कारण मरीचि देव, नरक आदि के भवों को धारण करता रहा और दुखों को भोगता रहा। अंत में वह त्रिपृष्ठ नाम का राजा हुआ। इस भव में भी धन और भोगो के प्रति अत्यधिक लालसा होने से वह सातवें नरक गया। वहां से निकल कर जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में स्थित गंगानदी के किनारे सिंहगिर पर्वत पर सिंह हुआ और यहीं से शुरू हुई उसकी भगवान महावीर बनने की यात्रा। दरअसल समझने की बात तो यह है कि अनेकों भवों के संस्कार और शुभ कर्म ही व्यक्ति को परमात्मा बना देते हैं।

अंतर्मुखी मुनि पूज्य सागर

अहिंसा का यात्री महावीर

राजा के आंगन में 15 महीने तक हुई रत्न वर्षा तो रानी को आए 16 स्वप्न

भारतीय संस्कृति का इतिहास गवाह है कि जब-जब इस धरती पर किसी महापुरुष का जन्म होता है, तब-तब मां को शुभ स्वप्न आता है और जिस नगर में जन्म होने वाला होता है, वहां शांति और सुख का वातावरण हो जाता है। भगवान महावीर जब माता त्रिशला के गर्भ आ रहे थे तो उससे पहले रात्रि के अन्तिम पहर में आषाढ़ शुक्ल षष्ठी के दिन मां त्रिशला ने बैल, हाथी, सिंह, दो माला, पूर्ण चंद्रमा, सूर्य, दो मछली, सोने के दो कलश, तालाब, समुद्र, लक्ष्मी, स्वर्ग विमान, नाग भवन, रत्न राशि, धूम रहित अग्नि, ये सोलह स्वप्न देखे। माता त्रिशला को बहुत आश्चर्य हुआ कि आज यह स्वप्न मुझे क्यों आए। वह सुबह उठते ही अपने पति राजा सिद्धार्थ के पास गईं और उन्हें स्वप्न के बारे में बताया। तब राजा सिद्धार्थ ने अपने ज्ञान से मां त्रिशला को स्वप्न का अर्थ बताया कि आज तुम्हारे गर्भ में तीर्थंकर बालक का प्रवेश हुआ है। वह तीनों लोकों का स्वामी होगा, शक्तिशाली, सम्पूर्ण ज्ञान का धारी और संसार का मार्गदर्शन करने वाला होगा। भगवान महावीर जब गर्भ में आए तो राजा सिद्धार्थ के राजमहल के आंगन में स्वर्ग के देवों ने दिन में तीन बार साढ़े सात करोड़ रत्नों की वर्षा 15 महीने तक अर्थात् गर्भ में आने के छह महीने पहले और गर्भ में रहने तक नौ महीने तक की थी। भगवान महावीर के गर्भ में आते ही स्वर्ग के राजा इंद्र की आज्ञा से ह्रीं, श्रीं, क्लीं आदि अष्टकुमारी देवियां माता त्रिशला की सेवा करने में लग गई थीं।

अंतर्मुखी मुनि पूज्य सागर

अहिंसा का यात्री महावीर

जब डोल गया था इन्द्र का सिंहासन

जब भगवान महावीर का जन्म हुआ, तब स्वर्ग लोक में अलग-अलग देवों के यहां अलग-अलग वाद्य यंत्र बजने लगे थे। भवनवासी देवों के यहां शंख, व्यंतर देवों के यहां भेरि, कल्पवासी देवों के यहां घंटा, ज्योतिषी देवों के यहां सिंह गर्जना होने लगी थी। तब स्वर्ग के राजा सौधर्म इन्द्र का सिंहासन कांपने लगा। इन्हीं वाद्य यंत्रों के बजने के बाद सौधर्म इन्द्र ने अपने अवधिज्ञान से जाना कि राजा सिद्धार्थ और रानी त्रिशला के यहां प्रजा का मार्गदर्शन करने के लिए 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर का जन्म हो गया है। सौधर्म इन्द्र ने स्वर्ग में अपने स्थान से सात कदम आगे बढ़ कर नवजात भगवान महावीर को नमस्कार किया और कुबेर को आज्ञा दी कि तुम वैशाली(कुंडलपुर) नगर को सजाओ। सौधर्म इन्द्र भी स्वर्ग के अन्य देवों के साथ हाथी, घोड़े, रथ, गंधर्व, अप्सराओं, प्यादों और बैल आदि इन सात प्रकार की बड़ी सेना लेकर राजा सिद्धार्थ के घर जाने के निकले। नवजात बालक को सबसे पहले सौधर्म इन्द्र के पत्नी शचि इंद्राणी ने देखा और एक भव के बाद मोक्ष जाने का शुभ कर्म बंध किया। भगवान महावीर इतने सुंदर और निर्मल थे कि इन्द्र ने भी 1000 नेत्र बनाकर देखा। एक दिन के बालक भगवान महावीर को सौधर्म इन्द्र ने ऐरावत हाथी पर बैठाकर पाण्डुक शिला पर ले जाकर 1008 कलशों से उनका जन्मकल्याणक अभिषेक किया। भगवान के शरीर पर जन्म से श्रीवृक्ष, स्वास्तिक, शंख, कमल आदि 1008 लक्षण थे। अभिषेक करने के बाद वापस राजा सिद्धार्थ के आंगन में तांडव नृत्य किय गया। बालक महावीर को रानी त्रिशला को देकर सौधर्म इन्द्र अपने देव परिवार के साथ स्वर्ग चले गए।

अंतर्मुखी मुनि पूज्य सागर

अहिंसा का यात्री महावीर

अद्भुत विस्तार वाले ऐरावत हाथी पर गोद में बैठाकर इन्द्र ने कराया था महावीर का जन्मकल्याणक

भगवान महावीर का जन्मकल्याणक महोत्सव स्वर्ग के मुख्य देव सौधर्म इन्द्र देव परिवार के साथ मनाने धरती पर आए तो उस समय वह जो ऐरावत हाथी लेकर आए, उसका विस्तार अद्भुत था। वह ऐरावत हाथी एक लाख योजन विस्तार वाला था, उसके 32 मुख थे, हर मुख पर चार-चार दांत थे और हर दांत पर एक तालाब था, हर तालाब पर एक कमल वनखण्ड था, हर कमल खंड पर 32 महापद्म थे, हर महापद्म एक योजन प्रमाण वाला था, हर महापद्म पर एक नाट्यशाला थी, हर नाट्यशाला में उत्तम-उत्तम 32 अप्सराएं नृत्य कर रही थीं। कुल मिलाकर एक हाथी 32 मुख, 128 दांत, 128 तालाब, 128 कमल वनखण्ड, 4096 महापद्म, 4096 नाट्यशाला, 131072 अप्सराओं वाला था। ऐसे ऐरावत हाथी पर भगवान महावीर को सौधर्म इन्द्र अपनी गोद में लेकर बैठे थे। ऐशान इन्द्र ने बालक महावीर के ऊपर सफेद छत्र लगाया, सन्तकुमार और महेंद्र देव ने सफेद चंवर ढोला। इतना वैभव देख अन्य देवों और मनुष्यों के अंदर भी धर्म के प्रति श्रद्धा बढ़ गई। जिस सुमेरू पर्वत पर भगवान का जन्मकल्याणक अभिषेक हुआ, वह सुमेरु पर्वत एक लाख योजन वाला था, उस पर्वत पर पाण्डुक वन में ईशान दिशा पर पांडूक शिला थी, जो सौ योजन लंबी, पचास योजन चौड़ी, आठ योजन ऊंची और अर्ध चंद्रमा के समान वाली थी। जिस स्वर्ण कलश से भगवान का 1008 कलशों से जन्माभिषेक हुआ, वह एक कलश आठ योजन गहरा, मुख पर एक योजन और उदर में चार योजन वाला था।

अंतर्मुखी मुनि पूज्य सागर

अहिंसा का यात्री महावीर

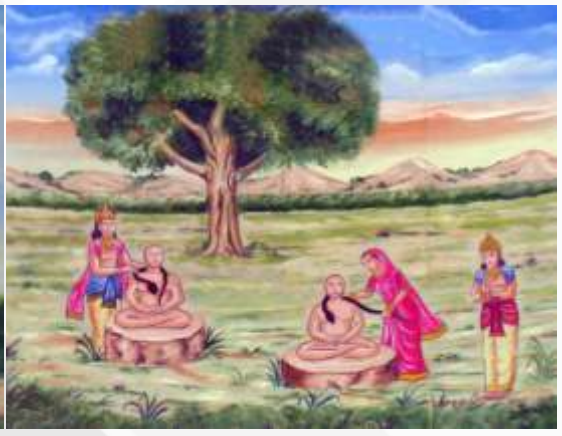

वीर, अतिवीर, महावीर ने दिया था पंचशील का सिद्धांत

आज महावीर जयंती है। महावीर महाविचार श्रृंखला की आखिरी कड़ी में आज हम उनके जीवन और उपदेशों के बारे में जानने के साथ-साथ उनके पांच नामों के बारे में भी जानेंगे। भगवान महावीर ने सोलहकारण भावनाओ के चिंतन से तीर्थंकर(भगवान) बनने का कर्म बांधा था। जब इस धरती पर भगवान महावीर का जन्म हुआ था, उस समय एक क्षण के लिए नरक तक में प्राणी मात्र ने सुख अनुभव किया था। भगवान महावीर को पांच नाम से जाना जाता है । वीर, वर्धमान, सन्मति, अतिवीर और महावीर। इन सभी नामों के पीछे एक-एक कहानी है। जन्माभिषेक के समय सौधर्म इंद्र ने वीर और वर्धमान नाम दिया। कुछ के अनुसार उन्हें वर्धमान नाम उनके पिता ने दिया क्योंकि उनके जन्म के बाद राज्य की समृद्धि बढ़ती गई। तो संजय और विजय नामक दो मुनिराज की शंका का समाधान महावीर को देखते ही होने से मुनिराजों ने उन्हें सन्मति नाम दिया। वहीं संगम नाम के देव ने सर्प बनकर भगवान महावीर की परीक्षा ली, जिसमें वह विजयी हुए तो संगम देव ने भगवान की स्तुति करते हुए महावीर नाम रखा। इसी तरह से एक पागल और मदमस्त हाथी को पराजित करने के कारण उन्हें अतिवीर नाम मिला। भगवान महावीर ने बचपन से ही अपनी चर्या में अहिंसा को उतारा और फिर अपने आचरण, चर्या और उपदेशों के माध्यम से जीओ और जीने दो, अहिंसा परमो धर्म का सिद्धांत प्रतिपादित कर हिंसा के तांडव को समाप्त करने का क्रम प्रारंभ किया। उन्होंने दुनिया को जैन धर्म के पंचशील सिद्धांत अहिंसा, सत्य, अपरिग्रह, अचौर्य और ब्रह्मचर्य बताए। उन्होंने संदेश दिया कि समस्त आत्माएं एक समान हैं, कोई बड़ा-छोटा नहीं हैं। सब अपने कर्म से छोटे-बड़े बनते हैं। मनष्य को आत्म कल्याण के लिए राग-द्वेष,, इष्या, आकांशा की भावनओं का परित्याग करना होगा। सभी अपनी-अपनी क्षमताओं के अनुसार एवं मर्यादाओं में रह कर अहिंसा व धर्म की परिपालना कर सकते हैं। उन्होंने अपने उपदेश में स्पष्ट कहा था कि पाप से घृणा करो, पापी से नहीं। एक-दूसरे के प्रति क्षमा, वात्सल्य व करुणा का भाव धारण करने से ही आत्मिक शांति एवं समृद्धि प्राप्त हो सकती है।

अंतर्मुखी मुनि पूज्य सागर

अहिंसा का यात्री महावीर

भगवान महावीर स्वामी के चौंतीस भव (जन्म) इस प्रकार हैं

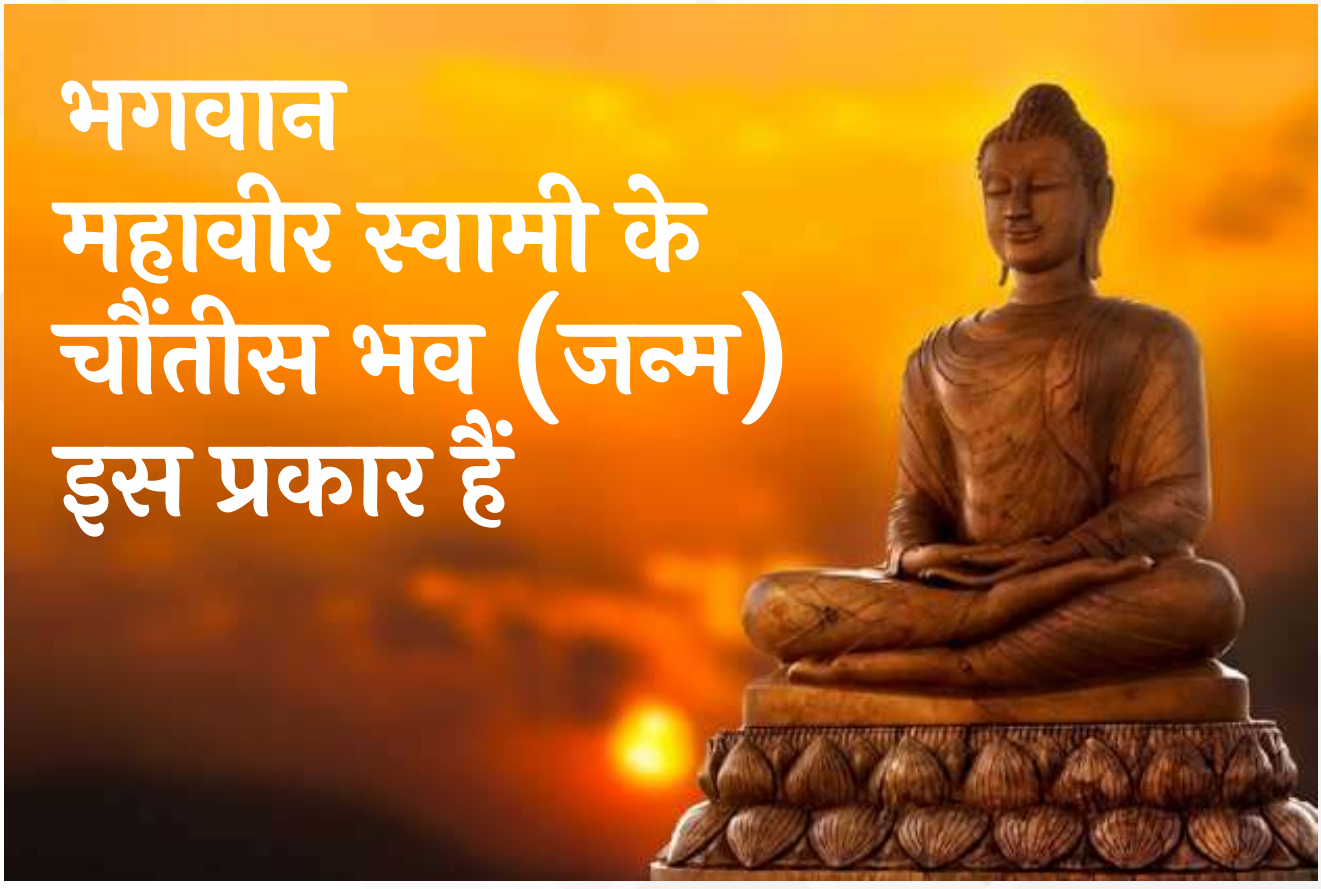

1. पुरुरवा भील, 2. पहले स्वर्ग में देव, 3. भरत पुत्र मरीच, 4. पांचवें स्वर्ग में देव, 5. जटिल ब्राह्मण, 6. पहले स्वर्ग में देव, 7. पुष्यमित्र ब्राह्मण, 8. पहले स्वर्ग में देव, 9. अग्निसम ब्राह्मण, 10. तीसरे स्वर्ग में देव, 11. अग्निमित्र ब्राह्मण, 12. चौथे स्वर्ग में देव, 13. भारद्वाज ब्राह्मण, 14. चौथे स्वर्ग में देव, 15. मनुष्य (नरकनिगोदआदि भव), 16. स्थावर ब्राह्मण, 17. चौथे स्वर्ग में देव, 18. विश्वनंदी, 19. दसवें स्वर्ग में देव, 20. त्रिपृष्ठ नारायण, 21. सातवें नरक में, 22. सिंह, 23. पहले नरक में, 24. सिंह, 25. पहले स्वर्ग में, 26. कनकोज्जबल विद्याधर, 27. सातवें स्वर्ग में, 28. हरिषेण राजा, 29. दसवें स्वर्ग में, 30. चक्रवर्ती प्रियमित्र, 31. बारहवें स्वर्ग में, 32. राजा नंद, 33. सोलहवें स्वर्ग में, 34. तीर्थंकर महावीर।

अहिंसा का यात्री महावीर

महावीर अनमोल वचन

- भगवान महावीर का जीवन अब पुराणों की गाथा मात्र नहीं रहा, उन्हें अब इतिहासकारों ने ऐतिहासिक महापुरुष के में स्वीकार किया ।
- भगवान महावीर का जीवन आत्मा से परमात्मा बनने के क्रमिक विकास की कहानी है।
- भगवान महावीर का जीवन अहिंसा के आधार पर मानव जीवन के चरम विकास की कहानी है।
- घटनाओं में उनके व्यक्तित्व को खोजना भी व्यर्थ है। भगवान महावीर का व्यक्तित्व अखंड है, अविभाज्य है उसका विभाजन संभव नहीं हैं ।
- तीर्थंकर महावीर के विराट व्यक्तित्व को समझने के लिए उन्हें विरागी, वीतरागी दृष्टिकोण से देखना होगा।
- महावीर की वीरता में दौड़-धूप नहीं, उछल-कूद नहीं, मारकाट नहीं, हाहाकार नहीं, अनंत शांति है। उनके व्यक्तित्व में वैभव की नहीं, वीतराग-विज्ञान की विराटता है।
- दीपावली अंधकार में प्रकाश का पर्व है
- सर्वप्राणी-समभाव जैसा महावीर की धर्म सभा में प्राप्त था वैसा अन्यत्र दुर्लभ है।
- धार्मिक जड़ता और आर्थिक अपव्यय को रोकने के लिए महावीर ने क्रियाकाण्ड व यज्ञों का विरोध किया।
- सब जीवों को उन्नति के समान अवसरों की उपलब्धि ही सर्वोदय है।
- महावीर के धर्मशासन में महिलाओं को सम्मानपूर्ण स्थान प्राप्त था।
- महावीर ने विद्रोह नहीं विद्रोह किया था।
- दुनिया ने उन्हें अपने रंग में रंगना चाहा, पर आत्मा के रंग में सर्वांग सराबोर महावीर पर दुनिया का रंग न चढ़ा।
- जो समस्त जगत को जानकर उससे पूर्ण अलिप्त, वीतराग रह सके अथवा पूर्ण रूप से अप्रभावित रहकर जान सके, वही भगवान है।
- वन में ही तो महावीर रागी से वीतरागी बने थे, अल्पज्ञानी से पूर्ण ज्ञानी बने थे।
- जन-जन की ही नहीं, अपितु कण-कण की स्वतंत्र सत्ता की उद्घोषणा तीर्थंकर महावीर की वाणी में हुई है।
- भगवान महावीर के चले जाने पर गौतम गणधर रोने नहीं बैठे, अपितु महावीर की बताई राह पर चलकर स्वयं महावीर बन गए थे ।

अहिंसा का यात्री महावीर

महावीर अष्टक

• 1 •

यदीये चैतन्ये मुकुर इव भावाश्चिदचितः।
समं भान्ति ध्रौव्य-व्ययजनि-लसंतोऽन्तरहिताः।।
जगत्साक्षी मार्ग-प्रकटनपरो भानुरिव यो।
महावीर-स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे (नः)।।१।।

अर्थ – उत्पाद, व्यय और ध्रौव्य से सुशोभित, अन्तरहित, चेतन-अचेतन पदार्थ जिनके ज्ञान में एक साथ झलकते हैं जो विश्वदर्शी हैं, सूर्य के समान मोक्षमार्ग के प्रकाशक वे महावीर भगवान् हमको हमेशा दर्शन देते रहें।।१।।

• 2•

अताम्रं यच्चक्षुः कमलयुगलं स्पन्दरहितं।
जनान्कोपापायं प्रकटयति वाभ्यन्तरमपि।।
स्फुटं मूर्तिर्यस्य प्रशमितमयी वाति विमला।
महावीर-स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे (नः)।।२।।

अर्थ – जिनके नेत्र-कमल ललाई रहित और टिमकार रहित हैं तथा जो अन्तरंग में भी क्रोध का अभाव प्रकट करते हैं। जिनकी मूर्ति स्पष्ट, प्रशान्त और अत्यन्त निर्मल है ऐसे महावीर भगवान् हमको या मुझको दर्शन देते रहें।।२।।

• 3•

नमन्नाकेन्द्राली - मुकुट-मणि - भाजालजटिलं।
लसत्पादाम्भोज-द्वयमिह यदीयं तनुभृतां।।
भवज्वाला-शान्त्यै प्रभवति जलं वा स्मृतमपि।
महावीर-स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे (नः)।।३।।

अर्थ – जिनके दोनों चरण-कमल नमस्कार करते हुए स्वर्ग के देवों की मुकुट-मणियों की प्रभा से शोभायमान हैं। इस जगत् में जिनका नाम स्मरण भी संसारी जीवों के संसार की शान्ति के लिए जल बन जाता है, ऐसे महावीर स्वामी मुझे दर्शन देते रहें।।३।।

अहिंसा का यात्री महावीर

महावीर अष्टक

•4•

यदर्चाभावेन प्रमुदितमना दर्दुर इह।
क्षणादासीत्स्वर्गी गुणगणसमृद्धः सुखनिधिः।।
लभंते सद्भक्ताः शिवसुखसमाजं किमु तदा।
महावीरस्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे (नः)।।४।।

अर्थ - जिनकी पूजा करने के भाव से आनन्दित भाव वाला मेढक इस संसार में क्षण भर में ही गुणों के समूह, सुख से सम्पन्न ऐसे स्वर्ग में देव बन गया। तब जो सद्भक्त हैं वे आपकी भक्ति से मोक्ष सुख को प्राप्त करते हैं, इसमें आश्चर्य ही क्या है। ऐसे महावीर स्वामी हमको या मुझे दर्शन देते रहे।।४।।

•5•

कनत्स्वर्णाभासोऽप्यपगत तनुर्ज्ञान-निवहो,
विचित्रात्माप्येको नृपति-वर सिद्दार्थ-तनयः।
अजन्मापि श्रीमान् विगतभवरागोद्भुत-गतिः,
महावीर-स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे (नः)।।५।।

अर्थ - स्वर्ण के समान कान्ति वाले होने पर भी जो शरीर रहित हैं, ज्ञान के समूह अनेक गुणों से युक्त होने से अनेक रूप होकर भी जो एक हैं, श्रेष्ठ राजा सिद्धार्थ के पुत्र होने पर भी जो जन्म रहित हैं, लक्ष्मीवान् होने पर भी जिनका संसार रूप राग निकल चुका है तथा जो मोक्ष गति को प्राप्त हैं, ऐसे भगवान् महावीर मुझे दर्शन देते रहें।।५।।

•6•

यदीया वाग्गङ्गा विविध-नय कल्लोल-विमला,
वृहज्ज्ञानांभोभिर्जगति जनतां या स्नपयति ।
इदानीमप्येषा बुध-जनमरालैः परिचिता,
महावीर-स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे (नः)।।६।।

अर्थ - जिनकी विविध प्रकार के नयरूपी तरंगों से स्वच्छ ऐसी विमल दिव्यध्वनि रूपी गंगा जगत् के जीवों को विशिष्ट ज्ञानरूपी जल के द्वारा नहलाती है, ज्ञानीजनरूपी हंसों के द्वारा अब भी जानी जाती है, ऐसे भगवान् महावीर (हमको) मुझे सदैव दर्शन देते रहें।।६।।

अहिंसा का यात्री महावीर

महावीर अष्टक

•7•

अनिर्वारोद्रेकस्त्रिभुवनजयी काम-सुभटः,
कुमारावस्थायामपि निजबलाद्येन विजितः।
स्फुरन्नित्यानन्द-प्रशम-पद-राज्याय स जिनः,
महावीर-स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे (नः)।।७।।

अर्थ – जिनको दूर करना कठिन है। ऐसे तीन लोक को जितने वाले कामदेव को भी जिन्होंने अपने आत्मबल से कुमार अवस्था में जीता है, ऐसे स्फुरायमान होते हुए नित्य-आनंद रूप प्रशान्त पद स्वरूप वे जिनेन्द्र महावीर स्वामी हमको या मुझे दर्शन देते रहें।।७।।

•8•

महामोहातङ्क – प्रशमनपरा – कस्मिकभिषङ्,
निरापेक्षो बन्धुर्विदित-महिमा मङ्गलकरः।।
शरण्यः साधूनां भवभयभृतामुत्तमगुणो।
महावीर-स्वामी नयन-पथ-गामी भवतु मे (नः)।।८।।

अर्थ – जो मोहरूपी रोग को शमन करने के लिए आकस्मिक वैद्य हैं, अपेक्षा रहित बंधु हैं, जिनकी महानता प्रकट है, जो मंगल करने वाले हैं तथा संसार से भयभीत साधुओं को शरणभूत हैं, ऐसे महावीर स्वामी हमको या मुझे दर्शन देते रहें।।८।।

•9•

-अनुष्टुप् छंद-

महावीराष्टकं स्तोत्रं, भक्त्या भागेन्दुना कृतम्।
यः पठेच्छृणुयाच्चापि, स याति परमां गतिम्।।९।।

अर्थ – भागचंद जी के द्वारा भक्ति से रचे गये इस महावीर स्वामी के आठ श्लोकों के स्तोत्र को जो भी पढ़ता और सुनता है वह मोक्ष गति को प्राप्त होता है।।९।।

अहिंसा का यात्री महावीर

अहिंसा का यात्री महावीर

अहिंसा का यात्री महावीर

अहिंसा का यात्री महावीर

जल फल वसु सजि हिम थार,तन मन मोद धरौं ।
गुण गाऊँ भवदधितार,पूजत पाप हरौं ।।
श्री वीर महा अतिवीर,सन्मति नायक हो ।
जय वर्धमान गुणधीर,संमतिदायक हो ।।
ऊं ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तयेअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।

श्रीफल फाउंडेशन
64, अशोक नगर, रोड नम्बर 2, उदयपुर (राज.)-313001
shreephalfoundation@gmail.com www.shreephalfoundation.com

संस्कृति मंदिर

"विलासिता में डूबा जीवन उधार का,
शांति की चाह लेकिन नाम नहीं विचार का,
पतन का कारण है अभाव संस्कार का"

श्रीफल फाउंडेशन

64, अशोक नगर, रोड नम्बर 2, उदयपुर (राज.)-313001

shreephalfoundation@gmail.com www.shreephalfoundation.com

'श्रीफल' यह पत्रिका प्रकाशक एवं मुद्रक अजीत कुमार जैन पिता प्रभूलाल जैन ने श्रीफल फाउंडेशन के स्वामित्व के लिये जैन प्रिण्टर्स, सुनील टेक्सटाईल्स के पास, 55, अरविंद नगर, सुंदरवास, उदयपुर-313001 (राजस्थान) से मुद्रित एवं श्रीफल फाउंडेशन, 64, अशोक नगर, रोड नम्बर 2, उदयपुर-313001 (राजस्थान) से प्रकाशित। सम्पादक : अजीत कुमार जैन • मोबाइल : 9592952436, 9309201008 • ईमेल : shreephal2017@gmail.com • वेबसाइट : www.shreephalnews.com